जिनभाषित २०७ ०१ (फोल्डर नं. ०२४३१३)

सम्पादक – प्रो. रतनचन्द्र जैन

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय-समता-नि-कांक्षिता में अनुत्तीर्ण गृहस्थ मुनि-डिग्री का पात्र नहीं ----------२
रयणसार के रचयिता कौन? – पं.वंशीधर शास्त्री एम.ए ----------८
धर्म एवं संस्कृति- संरक्षण का दायित्व - स्व. डॉ. ज्योतिप्रसाद जी जैन ---------- १४
सल्लेखना - अन्तिम अवस्था में आत्मशोधन का तप - कैलाश मडवैया ----------१८
मूकमाटी - अधुनातम आध्यात्मिक रूपक महाकाव्य- डॉ. पुष्पसता जैन ----------२१
चुप्पी तोडें विद्वान - डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन ---------- २६
जिज्ञासा- समाधान - पं. रतनलाल बैनाडा ---------- २९
संस्मरण- अनुकम्पा - मुनि श्री क्षमासागर जी ----------३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org